पाठ–9

अभ्यर्पण

संकलित

पाठ परिचय

भारतीय इतिहास में ऐसी अनेक स्वर्णिम घटनाएँ अंकित हैं, जब–जब भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय अखण्डता व अस्मिता को धूमिल व तोड़ने का प्रयास किया गया है, तब–तब प्रत्येक काल– खण्ड में अनेक दानवीर, युद्धवीर व शूरवीरों ने अपने सर्वस्व समर्पण के द्वारा इसकी रक्षा की है, क्योंकि हमारी संस्कृति का ध्रुव सत्य सिद्धांत है– 'सत्यमेव जयते'

इसी संदर्भ में परोपकार के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने वाले प्रत्येक काल खण्ड के आलोक स्तम्भ महर्षि दधीचि, दानवीर कर्ण तथा भामाशाह के दानवीर स्वरूप को अभ्यर्पण के माध्यम से उद्‌घाटित किया गया है। समय और स्थान की दृष्टि से विभिन्नता के बाद भी दानशीलता का संस्कार भारतीय महापुरुषों में कितनी सघनता से उपलब्ध था, यह इस पाठ के माध्यम से सम्प्रेषित करने का प्रयास किया गया है। सर्वांग समर्पण की अभिप्रेरणा का विकास ही इन सजीव गद्यांशों के चित्रण का मूल मन्तव्य है।

महर्षि दधीचि

लोक कल्याण के लिए आत्म–त्याग करने वालों में महर्षि दधीचि आदि पुरुष हैं। दधीचि की माता चिति तथा पिता अथर्वा थे। बाल्यकाल के संस्कारों से तप, त्याग और जीव मात्र के प्रति दया भाव इनके जीवन का अवलम्बन बने। भगवान शिव के प्रति अटूट भक्ति और वैराग्य में इनकी जन्म से ही निष्ठा थी। इनकी पत्नी का नाम 'गभस्तिनी' था। गंगा तट पर ऋषि आश्रम में आतिथ्य सत्कार, पशु–पक्षी पालन, देवोपासना तथा ध्यान, धारणा करते हुए सपत्नीक आनन्दपूर्वक रहते थे।

महातपोबलि महर्षि दधीचि ने संसार के कल्याण के लिए अपनी देह छोड़कर अस्थियों का दान कर दिया। उनके इस महात्याग की पौराणिक कथा के अनुसार एक बार देवराज इन्द्र की सभा में बृहस्पति आए। अहंकार में मदान्ध देवराज इन्द्र बृहस्पति के सम्मान में उठकर खड़े नहीं हुए। बृहस्पति ने इसे अपना अपमान समझा और देवताओं को छोड़कर चले गए। तब देवताओं को 'विश्वरूप' को अपना गुरु बनाकर काम चलाना पड़ा, परन्तु विश्वरूप देवताओं से छिपाकर असुरों को यज्ञ–भाग देता था। इन्द्र को ज्ञात होने पर उन्होंने आवेशित होकर उसका सिर काट दिया। विश्वरूप त्वष्टा ऋषि का पुत्र था, उन्होंने क्रोधित होकर इन्द्र को मारने के लिए महाबली वृत्रासुर को यज्ञानुष्ठान से पैदा किया।

वृत्रासुर के भय और आतंक के कारण इन्द्र को सिंहासन छोड़कर भटकना पड़ रहा था। वृत्रासुर ने देवलोक में उत्पात फैला रखा था। उसकी अराजकता से परेशान होकर देवता ब्रह्मदेव के पास पहुँच कर रक्षा की प्रार्थना करने लगे। तब ब्रह्मा जी ने कहा– ''तुम शीघ्र ही ऋषिवर दधीचि के पास जाओ। ऋषि से उनकी अस्थियों की भिक्षा माँगो। उनका शरीर उपासना, व्रत और तपस्या से अत्यन्त दृढ़ हो गया है। उनकी हड्डियों से बने वज्र के अस्त्र से ही शत्रु का संहार सम्भव है।''

भगवान ब्रह्मदेव की आज्ञानुसार सभी देवता देवराज के साथ महर्षि दधीचि के आश्रम में पहुँचे और अपनी व्यथा–कथा सुनाकर ब्रहम्देव के बताए उपाय का कथन करते हुए महर्षि से अस्थियों की याचना की। महर्षि दधीचि ने परमार्थ के लिए अपना शरीर छोड़कर अस्थियों का दान करना सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपने मन को समाधिस्थ कर तन की ज्योति को परमात्मा में एकाकार कर दिया। इन्द्रदेव उनकी अस्थियां लेकर विश्वकर्मा के पास पहुँचे तथा वज्रास्त्र निर्माण का निवेदन किया। विश्वकर्मा ने उन अस्थियों से वज्रास्त्र बनाकर देवराज को दिया।

देवताओं तथा असुरों में एक बार फिर भयानक युद्ध हुआ और महर्षि की अस्थियों से निर्मित वज्रास्त्र से राक्षसों का संहार हुआ। वृत्रासुर ने तब अपना त्रिशूल फेंका और गदा से इन्द्र के वाहन ऐरावत पर आक्रमण किया। ऐरावत के सिर पर चोट आई, परन्तु इन्द्र ने अपनी विद्या से ऐरावत के माथे पर चोट को ठीक कर वृत्रासुर पर फिर से आक्रमण किया। भीषण संघर्ष के बाद देवराज इन्द्र ने वृत्रासुर का सिर वज्रास्त्र से काट दिया और सम्पूर्ण देवलोक को भय और आतंक से मुक्त कराया। इस प्रकार महादानी दधीचि के आत्म उत्सर्ग से धर्म की रक्षा हुई।

महादानी कर्ण

कर्ण महाभारत के उन पात्रों में है, जिन्होंने जीवन भर प्रतिकूलताओं से संघर्ष किया। सर्वथा योग्य होने पर भी कर्ण को वह कभी नहीं मिला, जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी था। कर्ण का जन्म कुन्ती को मिले एक वरदान स्वरूप हुआ था। जब वह कुँआरी थी, तब एक बार दुर्वासा ऋषि उसके पिता के महल में पधारे। तब कुन्ती ने एक वर्ष तक ऋषि की आदरपूर्वक सेवा की। कुन्ती के सेवा भाव से प्रसन्न होकर उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से यह देख लिया कि उसका विवाह पाण्डु से होगा तथा उससे सन्तान नहीं हो सकती, इसलिए यह वरदान दिया कि वह किसी भी देवता का स्मरण करके उनसे सन्तान प्राप्त कर सकती है।

एक दिन कुन्ती ने उत्सुकता वश कुँआरे पन में ही सूर्य देव का ध्यान किया। इससे सूर्य देव ने प्रकट होकर उसे एक पुत्र दिया जो सूर्य के समान ही तेजस्वी था और कवच तथा कुण्डल लेकर उत्पन्न हुआ था। अब सुन्दर बालक देख तनिक उल्लास के बाद लोक लाज के भय से कुन्ती चिन्तित हो गयी। अन्ततः उसने उस बालक को एक सन्दूक में रख गंगा जी में बहा दिया।

गंगा जी में बहते कर्ण को महाराज धृतराष्ट्र के सारथी अधिरथ और उनकी पत्नी राधा ने गोद ले लिया तथा उसका लालन–पालन किया। इसी कारण कर्ण को राधेय भी कहा जाता है। महाबलि कर्ण ने दुर्योधन से मित्रता का निर्वहन अपने प्राणों की अन्तिम श्वास तक किया।

महाभारत में अपनी वीरता के कारण जिस सम्मान से कर्ण का स्मरण होता है, उससे अधिक आदर उन्हें उनकी दान शीलता के लिए दिया जाता है। कर्ण का शुभ संकल्प था कि मध्याह्न में जब वह सूर्य देव की आराधना करता है, उस समय उससे जो भी माँगा जाएगा, वह स्ववचनबद्ध होकर उसको पूर्ण करेगा। कर्ण के जन्म से प्राप्त कवच कुण्डल के कारण उसकी युद्ध में शारीरिक क्षति होना असम्भव था।

तब अर्जुन के देव पिता इन्द्र ने भिक्षुक बनकर मध्याह्न पूजा के समय कवच कुण्डल की मांग की; इस प्रसंग में सूर्यदेव द्वारा पूर्व में ही सतर्क करने पर भी वचनबद्धता पर दृढ़ रह कर, आसन्न भवितव्य का पूर्वानुमान होने पर भी इन्द्र को कवच–कुंडल का दान देना तथा प्रत्युत्तर में वरदान लेने से इनकार करना महाभारत के विविध चरित्रों में कर्ण को सर्वोत्तम स्थान पर पहुँचाता है। इस प्रकार प्राणों की परवाह न करके अपनी प्रतिबद्धता अनुरूप दानशील कर्ण का नाम चिर स्मरणीय रहेगा।

इसी प्रकार एक ओर प्रसंग भी उल्लेखनीय है।

महाभारत का युद्ध चल रहा था। सूर्यास्त के बाद सभी अपने –अपने शिविरों में थे। उस दिन अर्जुन, कर्ण को पराजित कर अहंकार में चूर थे। वह अपनी वीरता की डींगे हाँकते हुए कर्ण का तिरस्कार करने लगे। यह देखकर श्रीकृष्ण बोले– 'पार्थ! कर्ण सूर्य पुत्र है। उसके कवच और कुण्डल दान में प्राप्त करने के बाद ही तुम विजय पा सके हो, अन्यथा उसे पराजित करना किसी के वश में नहीं था। वीर होने के साथ ही वह दानवीर भी है।'

कर्ण की दानवीरता की बात सुनकर अर्जुन तर्क देकर उसकी उपेक्षा करने लगा। श्रीकृष्ण अर्जुन की मनोदशा समझ गए। वे शान्त स्वर में बोले, 'पार्थ! कर्ण रणक्षेत्र में घायल पड़ा है। तुम चाहो तो उसकी दानवीरता की परीक्षा ले सकते हो।'

अर्जुन ने श्रीकृष्ण की बात मान ली। दोनों ब्राह्मण के रूप में उसके पास पहुँचे। घायल होने के बाद भी कर्ण ने ब्राह्मणों को प्रणाम किया और वहाँ आने का उद्देश्य पूछा। श्रीकृष्ण बोले– 'राजन! आपकी जय हो। हम यहाँ भिक्षा लेने आये हैं कृपया हमारी इच्छा पूर्ण करें।' कर्ण थोड़ा लज्जित होकर बोला– 'ब्राह्मण देव ! मैं रणक्षेत्र में घायल पड़ा हूँ । मेरे सभी सैनिक मारे जा चुके हैं। मृत्यु मेरी प्रतीक्षा कर रही है। इस अवस्था में भला मैं आपको क्या दे सकता हूँ ?'

'राजन्! इसका अर्थ यह हुआ कि हम खाली हाथ ही लौट जाएँ ? किन्तु इससे आपकी कीर्ति धूमिल हो जाएगी। संसार आपको धर्म विहीन राजा के रूप में याद रखेगा।' यह कहते हुए वे लौटने लगे। तभी कर्ण बोला– 'ठहरिए ब्राह्मण देव! मुझे यश–कीर्ति की इच्छा नहीं है, लेकिन मैं अपने धर्म से विमुख होकर मरना नहीं चाहता। इसलिए मैं आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण करूँगा।'

कर्ण के दो दाँत सोने के थे, उन्होंने निकट पड़े पत्थर से उन्हें तोड़ा और बोले, 'ब्राह्मण देव! मैंने सर्वदा सोने का ही दान किया है। इसलिए आप इन स्वर्ण युक्त दाँतों को स्वीकार करें।'

श्रीकृष्ण दान अस्वीकार करते हुए बोले– 'राजन्! इन दाँतों पर रक्त लगा है और आपने इन्हें मुख से निकाला है, इसलिए यह स्वर्ण जूठा है। हम जूठा स्वर्ण स्वीकार नहीं करेंगे।'

तब कर्ण घिसटते हुए अपने धनुष तक गये और उस पर बाण चढ़ाकर गंगा का स्मरण किया। तत्पश्चात् बाण भूमि पर मारा। भूमि पर बाण लगते ही वहाँ से गंगा की तेज जल धारा बह निकली। कर्ण ने उसमें दाँतों को धोया और उन्हें देते हुए कहा– 'ब्राह्मणो अब यह स्वर्ण शुद्ध है। कृपया इसे ग्रहण करें।'

तभी कर्ण पर पुष्पों की वर्षा होने लगी। भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए कर्ण बोला– 'भगवन्! आपके दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया। मेरे सभी पाप नष्ट हो गये। प्रभु! आप भक्तों का कल्याण करने वाले हैं।'

तब श्रीकृष्ण उसे आशीर्वाद देते हुए बोले– ''कर्ण! जब तक सूर्य, चन्द्र, तारे और पृथ्वी रहेंगे, तुम्हारी दानवीरता का गुणगान तीनों लोकों में किया जायेगा।''

महादानी भामाशाह

'' धन्य वह देश की माटी है, जिसमें भामा सा लाल पला।
उस दानवीर की यश गाथा को, मेट सका क्या काल भला।।

दानवीर भामाशाह का जन्म राजस्थान के मेवाड़ राज्य में 29 अप्रैल, 1547 को हुआ था। इनके पिता भारमल थे। जिन्हें राणा साँगा ने रणथम्भौर के किले का किलेदार नियुक्त किया था। भामाशाह बाल्यकाल से ही मेवाड़ के महाराणा प्रताप के मित्र, सहयोगी और विश्वास पात्र सलाहकार थे। अपरिग्रह को जीवन का मूल मंत्र मानकर संग्रहण की प्रवृत्ति से दूर रहने की चेतना जगाने में भामाशाह सदैव अग्रणी थे। उनको मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम था। दानवीरता के लिए भामाशाह का नाम आज भी अमर है।

महाराणा प्रताप ने 'हल्दी घाटी युद्ध' के बाद भी मुगलों पर आक्रमण जारी रखे थे। धीरे–धीरे मेवाड़ का बहुत बड़ा इलाका महाराणा प्रताप के कब्जे में आने लगा था। महाराणा की शक्ति बढ़ने लगी, किन्तु बिना बड़ी सेना के शक्तिशाली मुगल सेना के विरूद्ध युद्ध जारी रखना कठिन था। सेना का गठन बिना धन के सम्भव नहीं था।

राणा ने सोचा जितना संघर्ष हो चुका, वह ठीक ही रहा। यदि इसी प्रकार कुछ दिन और चला, तब सम्भव है जीते हुए इलाकों पर फिर से मुगल कब्जा कर लें। इसलिए उन्होंने यहाँ की कमान अपने विश्वस्त सरदारों के हाथों सौंप कर गुजरात की ओर कूच करने का विचार किया। वहाँ जाकर फिर से सेना का गठन करने के पश्चात् पूरी शक्ति के साथ मुगलों से मेवाड़ को स्वतन्त्र करवाने का विचार

उन्होंने किया। प्रताप अपने कुछ चुनिन्दा साथियों को लेकर मेवाड़ से प्रस्थान करने वाले ही थे कि वहाँ पर उनका पुराना खजाना मन्त्री नगर सेठ भामाशाह उपस्थित हुआ।

उसने महाराणा के प्रति 'खम्मा घणी' करी और कहा– ''मेवाड़ धणी अपने घोड़े की बाग मेवाड़ की तरफ मोड़ लीजिए। मेवाड़ी धरती मुगलों की गुलामी से आतंकित है, उसका उद्धार कीजिए।''

यह कहकर भामाशाह ने अपने साथ आये परथा भील का परिचय महाराणा से करवाया। भामाशाह ने बताया कि किस प्रकार परथा ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर पूर्वजों के गुप्त खजाने की रक्षा की और आज उसे लेकर वह स्वयं सामने उपस्थित हुआ है। ''मेरे पास जो धन है, वह भी पूर्वजों की पूँजी है। मेवाड़ स्वतन्त्र रहेगा तो धन फिर कमा लूँगा। आप यह सारा धन ग्रहण कीजिए और मेवाड़ की रक्षा कीजिए।''

भामाशाह का यह निष्ठापूर्ण सहयोग और समर्पण महाराणा प्रताप के जीवन में महत्त्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुआ । मेवाड़ के इस वृद्ध मन्त्री ने अपने जीवन में काफी सम्पत्ति अर्जित की थी। मातृभूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप का सर्वस्व होम हो जाने के बाद भी उनके लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए भामाशाह अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति के साथ प्रताप की सेवा में उपस्थित हुए और उनसे मेवाड़ के उद्धार की याचना की। माना जाता है कि यह सम्पत्ति इतनी अधिक थी कि उससे वर्षों तक 25,000 सैनिकों का खर्चा पूरा किया जा सकता था।

भामाशाह और परथा भील की देश भक्ति, दानशीलता और ईमानदारी देखकर महाराणा प्रताप का मन द्रवित हो गया। उनकी आँखो से अश्रुधारा फूट पड़ी । उन्होंने दोनों को गले लगा लिया। महाराणा ने कहा कि आप जैसे सपूतों के बल पर ही मेवाड़ जिन्दा है। मेवाड़ की धरती और मेवाड़ के महाराणा सदा–सदा इस उपकार को याद रखेंगे। मुझे आप दोनों पर गर्व है।

''भामा जुग–जुग सिमरसी, आज कायो उपगार।
परथा, पूँजा, पीथला, उयो परताप इक चार।।''

अर्थात् '' हे भामाशाह! आपने आज जो उपकार किया है, उसे युगों–युगों तक याद रखा जाएगा। यह परथा, पूँजा, पीथल और मैं प्रताप चार शरीर होकर भी एक है। हमारा संकल्प भी एक है।''

ऐसा कहकर महाराणा ने अपने मन के भाव प्रकट किए। महाराणा प्रताप ने मेवाड़ से पलायन करने का विचार त्याग दिया और अपने सब सरदारों को बुलावा भेजा। देव–रक्षित खजाना और भामाशाह का सहयोग तथा विपुल धन पाकर महाराणा ने सेना का संगठन करना शुरू कर दिया। एक के बाद दूसरा और फिर सारा मेवाड़ उनके कब्जे में आता चला गया।

उदारता के गौरव–पुरुष की इस प्रेरणा को चिर स्थायी रखने के लिए छत्तीसगढ़ शासन ने भामाशाह की स्मृति में दानशीलता, सौहार्द्र एवं अनुकरणीय सहायता के क्षेत्र में 'दानवीर भामाशाह सम्मान' स्थापित किया है।

उदयपुर, राजस्थान में राजाओं की समाधि स्थल के मध्य भामाशाह की समाधि बनी है। जैन महाविभूति भामाशाह के सम्मान में 31 दिसम्बर, 2000 को 3 रूपये का डाक टिकट जारी किया गया।

राजस्थान सरकार ने भी 'भामाशाह योजना' के तहत महिला को घर का मुखिया बनाते हुए भामाशाह कार्ड बनाने की योजना चलायी है। इसके अलावा महाराणा मेवाड़ फाउन्डेशन, उदयपुर द्वारा भी प्रति वर्ष 'भामाशाह अलंकरण' दिया जाता है। आज हर क्षेत्र में दानदाता के लिए भामाशाह पर्याय के रूप में प्रचलित है। भामाशाह का नाम अमर और शाश्वत है।

शब्दार्थ–

वैराग्य– मोह माया से दूर
व्यथा– पीड़ा
दैत्य– राक्षस
अस्त्र– हाथ से चलाया जाने वाला हथियार
सारथि– रथ चलाने वाला
सर्वस्व– सब कुछ
सम्बल– सहारा
सिमरसी– स्मरण करना,याद करना
अपरिग्रह– जरूरत से ज्यादा संग्रहण न करना।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दैत्यों को मारने के लिए वज्रास्त्र का निर्माण किया था–
   (क) इन्द्र (ख) दधीचि
   (ग) विश्वकर्मा (घ) वृत्रासुर
2. भामाशाह का समाधि स्थल कहाँ स्थित है?
   (क) जयपुर (ख) उदयपुर
   (ग) चित्तौड़ (घ) माण्डलगढ़

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. महर्षि दधीचि की पत्नी का क्या नाम था?
4. श्रीकृष्ण ने 'पार्थ' कहकर किसको संबोधित किया है?
5. भामाशाह के पिता का क्या नाम था?
6. कर्ण को 'राधेय' क्यों कहा जाता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7. असुरों को यज्ञ का भाग देने पर इन्द्र ने विश्वरूप की हत्या क्यों की?
8. श्री कृष्ण अर्जुन को रणभूमि में घायल पड़े कर्ण के पास क्यों ले गए?

9. महाराणा प्रताप हल्दी घाटी के युद्ध के पश्चात् मेवाड़ से पलायन क्यों करना चाहते थे ?

निबन्धात्मक प्रश्न

10. 'परथा, पूँजा, पीथला, उभो परताप इक चार' के आधार पर प्रत्येक चरित्र को स्पष्ट कीजिए।

11. 'अभ्यर्पण' में संकलित दानवीरों के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है? वर्तमान में दानवीरता की आवश्यकता पर विचार व्यक्त कीजिए?

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ग
2. ख